<u>प्रेस विज्ञप्ति</u>

9 जनवरी, 2016

श्रीमती स्मृति जूबिन इरानी द्वारा *नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला 2016* का उद्घाटन

"हम *अतिथि देवो भव* में विश्वास रखते हैं। हमारे यहाँ अतिथियों की पूजा की जाती है। हम आशा करते हैं कि हमारे चीन से आए मित्रों को भारत में अपने घर जैसा ही अहसास होगा"। ये शब्द माननीया मंत्री, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, **श्रीमती स्मृति जूबिन इरानी** ने नई दिल्ली स्थित प्रगति मैदान में '**नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला**' **2016** के उद्घाटन अवसर पर व्यक्त किए।

भारत–चीन के आत्मीय संबंधों पर बात करते हुए उन्होंने कहा कि अर्थशास्त्र में चीनी रेशम की पोशाक का उल्लेख यह प्रदर्शित करता है कि भारतीय इतिहास में भी चीन के साथ संबंधों की गूँज सुनाई देती है। उन्होंने यह आशा जताई कि मेले के माध्यम से दोनों देश केवल सांस्कृतिक विनिमय ही नहीं अपितु अपने परस्पर संबंधों को भी सुदृढ़ करेंगे।

श्रीमती इरानी ने एनबीटी द्वारा शुरू की गई 'नवलेखन पुस्तकमाला' की सराहना की गई जिसके अंतर्गत 16 पुस्तकें प्रकाशित की गई हैं। श्रीमती इरानी ने यह आशा भी जताई कि आने वाले समय में एनबीटी द्वारा इस पुस्तकमाला में 22 प्रमुख भारतीय भाषाओं में भी पुस्तकें प्रकाशित की जाएँगी। उन्होंने यह भी बताया कि तमिलनाडु, केरल, मणिपुर, असम सहित अनेक राज्यों से बच्चे तथा चुनिंदा फोटोग्राफरों को शोध यात्रियों के रूप में श्रीलंका, मलेशिया, थाइलैंड, कंबोडिया जैसे देशों में भेजा जाएगा तथा उनके संस्मरणों को पुस्तकों के माध्यम से प्रकाशित किया जाएगा।

उन्होंने मेले में स्कूली बच्चों, वरिष्ठ नागरिकों तथा दिव्यांगों हेतु निःशुल्क प्रवेश जैसे प्रयास की भी सराहना की। उन्होंने कहा कि मेले में बाल मंडप पर आयोजित होने वाली गतिविधियाँ बच्चों को अत्याधिक आकर्षित करेंगी।

"भारत ही नहीं अपितु संपूर्ण विश्व में वेदों को संस्कृति के प्रथम अभिलेख के रूप में माना जाता है"। ये विचार प्रख्यात लेखक, श्री एस.एल. भैरप्पा ने उद्घाटन अवसर पर व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि रामायण तथा महाभारत जैसे महाकाव्यों ने भारत की संस्कृति को समृद्ध बनाया है। उन्होंने यह भी कहा कि कवि, लेखक, कलाकार तथा विद्वान हमारे शास्त्रों से अत्याधिक प्रेरित हुए हैं। भारतीय नृत्य जैसे कथकली, भरतनाट्यम, ओडिसी आदि अपनी थीम के लिए इन्हीं शास्त्रों पर आश्रित हैं। ये शास्त्र ही नृत्य एवं संगीत के मानदंड साबित होते हैं।

उन्होंने यह भी कहा कि संस्कृति को संप्रेषण, प्रशासन तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की भाषा बनाने का प्रयास करना चाहिए।

इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित उपमंत्री एसएपीपीएफआरटी, चीन, श्री सुन शौशान ने कहा कि नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला 2016, सांस्कृतिक आदान–प्रदान तथा संपूर्ण विश्व में पारस्परिक समझ पैदा करने के लिए एक महत्वपूर्ण मंच है। उन्होंने यह भी कहा कि विशिष्ट अतिथि के रूप में भारत के प्रकाशकों के साथ मिलकर हमें अत्यंत प्रसन्नता है।

उद्घाटन अवसर पर एनबीटी के अध्यक्ष, श्री बल्देव भाई शर्मा ने बताया कि माननीया मंत्री, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, श्रीमती स्मृति जूबिन इरानी द्वारा मिले प्रोत्साहन से न्यास ने नवलेखन पुस्तकमाला की शुरुआत की है जिसमें 40 वर्ष की आयु तक के नए लेखकों की 16 पुस्तकें प्रकाशित की जा चुकी हैं। उन्होंने यह भी बताया कि मेले में थीम पैवेलियन में पुस्तकों का प्रदर्शन *भोज–पत्र से ई–बुक्स* तक किया गया है।

आईटीपीओ के सीएमडी, श्री एल.सी. गोयल ने यह आशा व्यक्त की कि नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला भारत की संस्कृति का प्रसार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

पुस्तक मेले के उद्घाटन अवसर पर प्रख्यात चीनी लेखक, श्री लिउ जेनयू; भारत में चीन के राजदूत, श्री ली यूचेंग तथा सचिव, उच्चतर शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, श्री विनयशील ओबेरॉय ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए।

इससे पूर्व एनबीटी की निदेशक, डॉ. रीता चौधरी ने इस अवसर पर उपस्थित सभी अतिथिगणों का स्वागत किया। उन्होंने यह विश्वास जताया कि मेले में पुस्तक प्रेमी विशेषकर युवाओं को पुस्तकों के ज़रिये भारतीय संस्कृति को जानने का अवसर मिलेगा।

इसके पश्चात श्रीमती इरानी द्वारा मेले में बने थीम मंडप तथा चीनी मंडप का उद्घाटन भी किया गया।